ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम विषय-हिन्दी

दिनांक—23/02/2021 वीर शिवाजी

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

<u>एन सी इ आर टी पर आधारित</u>

बस उन्होंने पूना के दक्षिण तोरण के दुर्ग पर आक्रमण किया और उसे ले लिया। वर्षा ऋतु था, दुग की शासक तथा सेना बाहर चली गयी थीं। यह अवसर शिवाजी ने उपयुक्त समझा। दुर्ग पर उन्होंने विजय ही नहीं पायी, वहां का धन तथा शस्त्र भी ले लिया। के डुग शासक ने बीजापुर के सुलतान के पास शिकायत भेजी। शिवाजी ने दरबार के अधिकारियों को कुछ दे-दिलाकर प्रसन्न का लिया। परिणामस्वरूप दुर्ग के शासक पर डाँट पड़ी। वह पदच्युत कर दिया गया। शिवाजी दुर्ग के शासक नियुक्त कर दिए गये। इसके पश्चात् उसी के निकट एक स्थान पर उन्होंने सुदृढ़ दुर्ग बनाया और उस स्थान का नाम रायगढ़ रखा। सिंहगढ़ तथा पुरंदर के भी दुर्ग इन्हें मिल गये। इस प्रकार, इनके हाथ चार दुर्ग आ गये।
~~~~~~~~~~

किंतु इन दुर्गों को लेने तथा बनवाने में शिवाजी का सब धन लग गया और उनके पास पैसा न रहा। इन्हीं दिनों बीजापुर के सुलतान का एक अधिकारी कुछ सैनिकों के साथ बीजापुर का खजाना लेकर जा रहा था। शिवाजी ने उस पर छापा मारा और सारा धन लूट लिया। उन्होंने इस धन से और दुर्गों पर अधिकार जमा लिया। बीजापुर के सुलतान बहुत क्रोधित हुए और आज्ञा दी कि शिवाजी तुरंत दरबार में उपस्थित हों। शिवाजी ने उत्तर दिया कि जितने दुर्ग तथा स्थान ले लिए हैं, मुझे मिल जाएँ तो मैं उपस्थित हो जाऊँगा। इस बात पर बीजापुर के सुलतान का पारा बहुत ऊपर चढ़ गया। उन्होने शिवाजी के पिता को दीवार में चुनवा दिया। केवल मुँह के सामने एक छेद साँस लेने के लिए छोड़ दिया और कहा, "शिवाजी से कह दो कि ठीक राह पर आ जाए नहीं तो छेद भी बंद कर दिया जाएगा। शिवाजी ने मुगल सम्राट से शाहजी को छोड़ देने के लिए पत्र लिखा और शाह जी छोड़ दिए गये।

शिवाजी का साहस बढ़ता गया। जहाँ जो स्थान मिलता. जो संपत्ति मिलती वे उस पर कब्ज़ा कर लेते थे। बीजापुर के सुलतान जब किसी प्रकार विजय प्राप्त न कर सके, तब उन्होंने अपने अधिकारी तथा सैनिक अफजल खाँ को शिवाजी को पकड़ने के लिए भेजा। सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ वह एक पिंजड़ा भी लाया जिसमें शिवाजी को बंदकर, बीजापुर के दरबार में ले जाने वाला था। इस सब की सूचना जासूस द्वारा शिवाजी को प्राप्त हो गयी थी।

प्रतापगढ़ के किले के पास दोनों की भेंट की तैयारी हुई। शिवाजी को अफजल खाँ की नीयत का पता चल ही गया था। इसलिए इन्होंने वस्त्र के नीचे लोटे का जिरह-बख्तर पहनने की बजाय पगड़ी के नीचे लोहे का टोप पहना, बायीं आस्तीन में छुरा छिपा लिया और दाहिने हाथ में बघनख पहन लिया। दो-दो साथियों के साथ यह लोग एक तंबू में मिले। अफजल खाँ ने देखा कि उसे यह उपयुक्त अवसर मिल गया है, उसने बायें हाथ से झपट कर शिवाजी की गरदन पकड़ी और दाहिने हाथ से तलवार का प्रहार पेट पर किया किंतु वहाँ तो लोहे का कवच था। शिवाजी ने अपनी गरदन छुड़ाने की चेष्टा की, किंतु सफलता न मिली। उन्होंने झट बायें हाथ का छुरा अफजल खाँ की पीठ में फेंक दिया और बघनखा से उसका पेट फाड़ डाला। अफजल ने सिर पर तलवार की चोट की। लोहे का टोप कट गया और शिवाजी के सिर पर साधारण चोट लगी। अफजल खाँ के दोनों साथी सहायता के लिए दौड़े किंतु उनकी एक न चली। शिवाजी के सहायकों ने अफजल खाँ के सहायकों का बध कर दिया। उसी अवसर पर शिवाजी के सैनिकों ने आक्रमण कर दिया और सारी सेना नष्ट कर दी गयी।

इस समाचार से बीजापुर के सुलतान और जल उठे। उन्होंने शिवाजी पर विजय प्राप्त करने के लिए अनेक प्रयत्न किए, किंतु सब में विफल रहे। इधर शिवाजी विजय पर विजय प्राप्त करते जा रहे थे और अपना राज्य बढ़ा रहे थे अंत में, इनके पिता के प्रयत्न से बीजापुर तथा शिवाजी के बीच संधि हो गयी।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”